International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

गोंड चित्रो के धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण का अध्ययन

Shailja Sullere[1], Dr. Prachi Chaturvedi[2]

Department of Journalism and Mass Communication, Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India

सारांश

गोंड चित्रकला भारतीय आदिवासी कलाओं में एक अद्वितीय और गहन प्रतीकात्मक परंपरा है, जो न केवल सौंदर्यशास्त्र का परिचायक है, बल्कि धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का भी सशक्त माध्यम है। यह चित्रकला गोंड समुदाय की जीवन-दृष्टि, विश्वास प्रणाली और ब्रह्मांडीय समझ को उजागर करती है। सैद्धांतिक रूप से, गोंड चित्रकला को एक "आध्यात्मिक दृश्य भाषा" के रूप में देखा जा सकता है, जो प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, आत्मा और ब्रह्मांड की एकता, तथा जीवन-मृत्यु के चक्र को प्रतिबिंबित करती है। इसमें प्रयुक्त प्रतीक जैसे वृक्ष, पशु-पक्षी, सर्प, सूर्य, चंद्रमा आदि न केवल सजावटी तत्व हैं, बल्कि उनके भीतर एक गहन धार्मिक आस्था निहित होती है। गोंड समाज के पेन देवता जैसे फर्शा पेन, भिम्मल पेन, बुढ़ा देव आदि चित्रों के माध्यम से अमूर्त रूप में उपस्थित रहते हैं, जो धार्मिक विश्वासों को दृश्य रूप में व्यक्त करते हैं। इन चित्रों में प्रयुक्त लयात्मक रेखाएँ, वर्तुल आकृतियाँ और बारीक पैटर्न ध्यान, साधना और अंतःचेतना की अवस्थाओं का प्रतीक हैं, जो उन्हें केवल दृश्य कला नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुष्ठान का रूप प्रदान करती हैं। गोंड चित्रकला का यह धार्मिक और आध्यात्मिक स्वर न केवल परंपरा की निरंतरता का द्योतक है, बल्कि समकालीन संदर्भों में भी इसका सांस्कृतिक और दार्शनिक महत्व अक्षुण्ण बना हुआ है। अतः यह अध्ययन इस धारणा को पुष्ट करता है कि गोंड चित्रकला एक जीवंत धर्म-दर्शन है, जो कला, संस्कृति, धर्म और आध्यात्मिकता के बीच गहरे संबंधों को प्रत्यक्ष करता है।

मुख्यशब्द- गोंड चित्र, धार्मिक एवं आध्यात्मिक, आदिवासी समुदाय, कलात्मक परंपराएँ, दैवीय शक्ति, प्राकृतिक तत्व, जीवन का प्रतीक, आध्यात्मिक संवाद

प्रस्तावना

भारत के आदिवासी समुदायों में गोंड जनजाति का एक विशिष्ट स्थान है, जिसकी सांस्कृतिक और कलात्मक परंपराएँ अत्यंत समृद्ध एवं जीवंत हैं। गोंड चित्रकला, जो मुख्यतः मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और ओडिशा के गोंड समुदायों में पाई जाती है, केवल एक कला का माध्यम नहीं है, बल्कि यह उनके धार्मिक विश्वासों, आध्यात्मिक दृष्टिकोण और विश्व दृष्टि को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम भी है। गोंड चित्रों में प्रयुक्त प्रतीक, रंग और आकृतियाँ केवल सौंदर्यबोध से प्रेरित नहीं होतीं, बल्कि इनका गहरा धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व होता है। गोंड समाज का धार्मिक जीवन प्रकृति-पूजक और जीव-जंतु (जीवों को केंद्र में रखने वाला) होता है। वे पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, नदियों, पर्वतों और अन्य प्राकृतिक तत्वों में ईश्वर या दैवीय शक्ति का वास मानते हैं। इस विश्वास की झलक गोंड चित्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वे अपने चित्रों में महुए का पेड़, हिरन, मोर, सर्प, सूरज, चाँद, जल और धरती को न केवल सजावटी रूप में प्रस्तुत करते हैं, बल्कि उन्हें पवित्र प्रतीकों के रूप में चित्रित करते हैं।

उदाहरणस्वरूप, महुआ का वृक्ष गोंड संस्कृति में जीवन का प्रतीक है, जो न केवल भौतिक रूप से उपयोगी है, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी इसे एक दैवी वरदान माना गया है। चित्रों में इसकी उपस्थिति जीवन-ऊर्जा, उर्वरता और चिरंतनता की ओर संकेत करती है। गोंड धार्मिक विश्वासों में 'फर्शा पेन', 'भिम्मल पेन', 'बुढ़ा देव' जैसे पेन देवताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये देवता गोंड मिथकों और लोककथाओं में स्थान पाते हैं और चित्रों में भी इनकी उपस्थिति प्रतीकों के माध्यम से दर्शाई जाती है। पेन देवताओं को चित्रों में कभी सर्प के रूप में, कभी बाघ के, तो कभी किसी अमूर्त आकृति के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। ये प्रतीक न केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रतीक होते हैं, बल्कि आत्मा, शक्ति, रक्षण और न्याय के वाहक भी माने जाते हैं। इन देवताओं की पूजा और उनसे संबंधित अनुष्ठानों का चित्रण गोंड चित्रों में अक्सर देखने को मिलता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि गोंड चित्रकला एक आध्यात्मिक संवाद का साधन है।

गोंड चित्रों का आध्यात्मिक पहलू केवल धार्मिक प्रतीकों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उसमें एक व्यापक चेतना का समावेश होता है। गोंड कलाकार मानते हैं कि चित्र बनाते समय वे एक प्रकार की पूजा कर रहे होते हैं। वे चित्रों के माध्यम से अपने देवताओं से संवाद करते हैं, अपने पुरखों की स्मृति को जागृत करते हैं और जीवन के रहस्यों को समझने का प्रयास करते हैं। यही कारण है कि पारंपरिक गोंड चित्रकला में आकृतियाँ गतिशील होती हैं, जिनमें जीवन की लय और प्रकृति की नृत्यमय गति स्पष्ट दिखाई देती है।

एक और महत्वपूर्ण धार्मिक पहलू यह है कि गोंड चित्र केवल पूजा स्थलों या धार्मिक आयोजनों तक सीमित नहीं होते, बल्कि ये घरों की दीवारों, अनाज भंडारों, तथा विवाह या मृत्युसंस्कार जैसे अवसरों पर भी बनाए जाते हैं। इस प्रकार, चित्र केवल कलात्मक सजावट नहीं बल्कि आध्यात्मिक शक्ति और शुभता के वाहक माने जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, घर की दीवार पर चित्रित मछलियाँ संपन्नता का प्रतीक हैं, तो सर्प रक्षण का प्रतीक। यह विश्वास है कि इन चित्रों से घर में नकारात्मक शक्तियाँ नहीं आतीं और देवता सदैव उपस्थित रहते हैं।

गोंड चित्रकला में बार-बार प्रयुक्त होने वाले चक्र, वर्तुल रेखाएँ और आवर्ती आकृतियाँ न केवल सौंदर्यात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि वे आध्यात्मिक जीवन चक्र, पुनर्जन्म, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आत्मा के चिरंतन अस्तित्व को दर्शाती हैं। जीवन और मृत्यु, सृष्टि और विनाश, दिन और रात, वर्षा और सूखा – ये सभी द्वंद्वात्मक तत्व गोंड चित्रों में संतुलन और पुनरावृत्ति के रूप में चित्रित किए जाते हैं, जो गोंडों की जीवन-दृष्टि में संतुलन और पुनरुत्थान की अवधारणा को दर्शाता है।

गोंड चित्रों के आध्यात्मिक दृष्टिकोण में एक समावेशी दृष्टि भी देखने को मिलती है। वे केवल अपने धर्म या जातीय देवताओं को चित्रित नहीं करते, बल्कि हिन्दू देवी-देवताओं जैसे शिव, गणेश, काली, लक्ष्मी आदि को भी अपने चित्रों में शामिल करते हैं, लेकिन उन्हें अपने पारंपरिक शैली और प्रतीकों के अनुरूप नया रूप देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि गोंड चित्रकला किसी सीमित धार्मिक फ्रेम में नहीं बंधी है, बल्कि यह विविध धर्मों, मान्यताओं और जीवन दृष्टियों का संगम है।

प्रकृति, देवता और आत्मा: गोंड चित्रों की धार्मिक संरचना

गोंड चित्रकला भारतीय आदिवासी कला का एक समृद्ध और जीवंत रूप है, जो गोंड समुदाय की धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन दृष्टि को प्रतिबिंबित करती है। इस चित्रकला की मूलभूत संरचना में तीन मुख्य घटकों की प्रमुख भूमिका होती है — प्रकृति, देवता और आत्मा। ये तीनों तत्व न केवल गोंड जनजाति के धार्मिक विश्वासों का आधार हैं, बल्कि उनके समस्त जीवन-दर्शन, अनुष्ठानों और कलात्मक अभिव्यक्तियों के केंद्र में भी स्थित हैं।

प्रकृति, गोंड समाज के लिए केवल एक भौतिक संसार नहीं, बल्कि एक जीवंत, संवेदनशील और ईश्वर-संपृक्त सत्ता है। वृक्ष, नदियाँ, पहाड़, पशु-पक्षी आदि को वे देवी-देवताओं का रूप मानते हैं। चित्रों में महुआ का पेड़, बाघ, सर्प, मछली, सूरज और चाँद बार-बार दिखाई देते हैं — ये न केवल सौंदर्यात्मक प्रतीक हैं, बल्कि

धार्मिक आस्था के आधार भी हैं। चित्रित की जाने वाली प्रत्येक प्रकृति वस्तु को गोंड कलाकार श्रद्धा और विश्वास के साथ अंकित करता है, जिससे चित्र में एक आध्यात्मिक ऊर्जा संचारित होती है।

देवता, गोंड चित्रों का दूसरा प्रमुख स्तंभ हैं। गोंड समाज में पेन देवताओं की पूजा होती है, जैसे फर्शा पेन, भिम्मल पेन और बुढ़ा देव। इन देवताओं की कोई विशिष्ट मूर्त रूप नहीं होता, लेकिन उन्हें प्रतीकों, रंगों और रूपों के माध्यम से दर्शाया जाता है। चित्रों में सर्प, आँखों वाली आकृतियाँ या अमूर्त संरचनाएँ पेन देवताओं की उपस्थिति का संकेत देती हैं। गोंड चित्रकला में इन देवताओं को श्रद्धा, शक्ति, रक्षण और ब्रह्मांडीय संतुलन के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

आत्मा, गोंड चित्रों की धार्मिक संरचना का तीसरा और सबसे सूक्ष्म आयाम है। गोंड कलाकार मानता है कि प्रत्येक चित्र में एक आत्मा होती है — "लाइफ फोर्स"। चित्र बनाते समय वह केवल रंगों और आकृतियों से नहीं खेलता, बल्कि अपनी चेतना, ध्यान और श्रद्धा को उसमें उड़ेलता है। यही कारण है कि गोंड चित्रों में बार-बार उपयोग होने वाली लयात्मक रेखाएँ, बिंदु, और दोहरावदार आकृतियाँ ध्यान और साधना की स्थिति का प्रतीक बन जाती हैं। यह आत्मिक ऊर्जा ही चित्र को एक धार्मिक अनुष्ठान का रूप देती है।

गोंड समाज की धार्मिक आस्था और चित्रों का प्रतीकवाद

गोंड समाज भारत की प्रमुख आदिवासी समुदायों में से एक है, जिसकी सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराएँ अत्यंत प्राचीन, गहन और प्रतीकात्मक हैं। इन परंपराओं का सबसे सुंदर और अभिव्यक्तिपूर्ण रूप गोंड चित्रकला में दिखाई देता है, जो केवल एक कलात्मक माध्यम नहीं है, बल्कि गोंड समाज की धार्मिक आस्था, प्रकृति के प्रति श्रद्धा, और आध्यात्मिक चेतना का सजीव प्रतिबिंब भी है। गोंड चित्रों का प्रतीकवाद इस समाज की विश्वदृष्टि को उजागर करता है, जिसमें प्रकृति, देवता और समुदाय के साथ आत्मा का गहरा संबंध निहित है।

गोंड समाज मूलतः प्रकृति-पूजक है। वे मानते हैं कि प्रकृति में बसने वाले हर तत्व — पेड़, पहाड़, जल, पशु-पक्षी — एक प्रकार की जीवंत सत्ता रखते हैं। गोंड चित्रों में महुआ का पेड़, बाघ, हिरन, मछली, मोर, सर्प, सूरज और चंद्रमा जैसे तत्व प्रमुख रूप से चित्रित होते हैं। इनमें प्रत्येक प्रतीक का एक विशेष धार्मिक अर्थ होता है। उदाहरण के लिए, महुआ का पेड़ न केवल आर्थिक जीवन का केंद्र है, बल्कि धार्मिक रीति-रिवाजों का भी अनिवार्य हिस्सा है। बाघ शक्ति और साहस का प्रतीक है, जबकि सर्प को पेन देवता का प्रतिनिधि माना जाता है।

गोंड धार्मिक परंपराओं में "पेन देवता" अत्यंत पूज्यनीय माने जाते हैं। फर्शा पेन, भिम्मल पेन, बुढ़ा देव जैसे देवताओं को गोंड समाज के रक्षक और मार्गदर्शक माना जाता है। चित्रों में इन देवताओं को स्पष्ट रूप से नहीं दर्शाया जाता, बल्कि प्रतीकों और अमूर्त रूपों के माध्यम से उनकी उपस्थिति को दर्शाया जाता है। उदाहरणतः, सर्प या त्रिभुजाकार आकृतियाँ पेन देवताओं की शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि गोंड चित्रकला में प्रतीकवाद एक संप्रेषणीय भाषा का कार्य करता है, जिसके माध्यम से धार्मिक अवधारणाएँ दर्शकों तक पहुँचती हैं।

गोंड चित्रकला में प्रयुक्त सूक्ष्म रेखाएँ, बिंदु, वक्र और आकृतियाँ भी प्रतीकात्मक होती हैं। इनका संबंध ब्रह्मांडीय लय, आत्मा की गति और समय के चक्र से होता है। प्रत्येक चित्र की रचना ध्यान और एकाग्रता की अवस्था में की जाती है, जो कि एक प्रकार का साधना-कार्य है। इस साधना में कलाकार चित्र के माध्यम से देवता से संवाद करता है, अपने समाज की स्मृतियों को जाग्रत करता है, और अपनी आध्यात्मिक चेतना को चित्र के भीतर प्रवाहित करता है।

इस चित्रकला का उपयोग केवल घरों की सजावट के लिए नहीं होता, बल्कि यह धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों, विवाह, फसल उत्सव, और मृत्युसंस्कार जैसे अवसरों पर भी किया जाता है। इन अवसरों पर बनाए गए चित्र समाज की सामूहिक धार्मिक चेतना और सामूहिक स्मृति को अभिव्यक्त करते हैं। गोंड चित्रों में प्रतीकों के चयन और स्थान का निर्धारण कोई आकस्मिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह गोंड धर्मशास्त्र और परंपरा के अनुसार तय किया जाता है।

गोंड चित्रों की शैली में आध्यात्मिक चक्र और जीवन-दर्शन

गोंड चित्रकला भारत की आदिवासी कला परंपराओं में न केवल एक विशिष्ट स्थान रखती है, बल्कि यह गोंड समाज के जीवन-दर्शन, आध्यात्मिक चेतना और धार्मिक विश्वासों का सजीव और सारगर्भित प्रतिबिंब भी है। इस चित्रकला की शैली में जो चक्र, रेखाएँ, रंगों की पुनरावृत्तियाँ और प्रतीकात्मक आकृतियाँ दिखाई देती हैं, वे केवल सौंदर्यशास्त्र तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि उनमें गोंड समाज का समग्र जीवन-दर्शन और आध्यात्मिक दृष्टिकोण गहराई से अंतर्निहित होता है।

गोंड चित्रों की शैली में सबसे विशिष्ट तत्व है आवर्ती रेखाएँ और वृत्ताकार संरचना, जो जीवन के चक्र को दर्शाती है। यह चक्र जन्म से मृत्यु तक, दिन-रात, ऋतुओं का क्रम, जीवन और पुनर्जन्म जैसी अवधारणाओं को सूक्ष्म रूप से अभिव्यक्त करता है। गोंड कलाकारों के लिए यह चक्र केवल भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक अर्थ रखता है – एक निरंतरता, एक गति जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आत्मा के अस्तित्व को दर्शाता है। गोंड समाज मानता है कि जीवन एक निरंतर प्रवाह है, और यह प्रवाह चित्रों में दोहराव के माध्यम से प्रकट होता है।

चित्रकला की शैली में प्रयुक्त बारीक बिंदु, लयबद्ध रेखाएँ, तथा समानांतर आकृतियाँ ध्यान और साधना की अवस्था को भी प्रतिबिंबित करती हैं। जब कलाकार चित्र बनाता है, तो वह एकाग्रता, श्रद्धा और आंतरिक संतुलन की स्थिति में होता है। यह प्रक्रिया स्वयं एक आध्यात्मिक क्रिया बन जाती है, जिसमें कलाकार अपने अस्तित्व को प्रकृति, ब्रह्मांड और देवत्व से जोड़ता है। इस प्रकार, गोंड चित्रकला केवल दृश्य-रचना नहीं, बल्कि ध्यान की एक प्रक्रिया है – जिसमें रचनाकार और रचना के बीच अंतर मिट जाता है।

गोंड चित्रों में प्रकृति की उपस्थिति और उसके माध्यम से व्यक्त जीवन-दर्शन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वृक्ष, नदियाँ, पहाड़, पक्षी, जानवर आदि न केवल सजावटी रूप में चित्रित होते हैं, बल्कि ये सभी जीवित प्राणी और तत्व आत्मा के वाहक के रूप में माने जाते हैं। उनका चित्रण इस विश्वास को दर्शाता है कि प्रत्येक वस्तु में एक आध्यात्मिक चेतना है और संपूर्ण सृष्टि एक आत्मिक बंधन से जुड़ी हुई है। यह दृष्टिकोण गोंड समाज की समग्र जीवन-दृष्टि को उजागर करता है, जिसमें मनुष्य, प्रकृति और देवत्व के बीच कोई पृथक्करण नहीं है।

गोंड चित्रों में रंगों का प्रयोग भी प्रतीकात्मक होता है। लाल रंग शक्ति और ऊर्जा का संकेत करता है, हरा रंग जीवन और उर्वरता का, नीला रंग आकाशीय और दैवीय सत्ता का प्रतीक होता है। रंगों की यह प्रतीकात्मकता उनके आध्यात्मिक अनुभव और परंपरा से जुड़ी होती है। इन रंगों के माध्यम से कलाकार न केवल दृश्य सौंदर्य उत्पन्न करता है, बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक संप्रेषण भी करता है।

गोंड चित्रकला की शैली में आत्मा और स्मृति का भी एक विशेष स्थान है। गोंड कलाकारों का मानना है कि प्रत्येक चित्र किसी न किसी पुरखों, देवताओं या लोककथाओं से जुड़ा हुआ होता है। ये चित्र उन कहानियों और विश्वासों का दृश्य रूप हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से संरक्षित किए गए हैं। चित्रों के माध्यम से ये स्मृतियाँ जीवन्त हो जाती हैं, जिससे चित्रकला एक 'स्मृति-चक्र' का भी निर्माण करती है।

गोंड चित्रों में मिथकीय पात्रों और देवताओं की दृष्टि

गोंड चित्रकला न केवल आदिवासी समाज की कलात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि यह उनकी धार्मिक आस्था, आध्यात्मिक चेतना और मिथकीय परंपराओं का सजीव दस्तावेज भी है। गोंड समाज की मिथकीय परंपरा अत्यंत समृद्ध है, जिसमें लोककथाएँ, पुरखों की स्मृतियाँ, प्राकृतिक शक्तियों के मानवीकरण और देवताओं की कथाएँ शामिल हैं। इन सभी को गोंड चित्रों के माध्यम से रूप, रंग और रेखा में प्रस्तुत किया जाता है। इन चित्रों में मिथकीय पात्रों और देवताओं की जो दृष्टि प्रकट होती है, वह गोंड समाज की सामूहिक चेतना, विश्वास और जीवन-दर्शन का प्रमाण है।

गोंड धर्म में प्रमुख स्थान पाते हैं "पेन देवता", जो लोकदेवताओं के रूप में पूजे जाते हैं। फर्शा पेन, भिम्मल पेन, बुढ़ा देव, हारदील पेन आदि देवताओं का चित्रण गोंड चित्रों में बहुत ही प्रतीकात्मक ढंग से किया जाता है। इन देवताओं का कोई स्थायी रूप नहीं होता, इसलिए उन्हें सर्प, वृक्ष, सूर्य, या अमूर्त आकृतियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। यह दर्शाता है कि गोंड समाज देवत्व को किसी एक रूप में नहीं बाँधता, बल्कि उसे प्रकृति के विविध रूपों में अनुभव करता है।

गोंड चित्रों में अनेक मिथकीय पात्रों का भी उल्लेख मिलता है, जो गोंड लोककथाओं में वीरता, बलिदान, रक्षण और प्राकृतिक संतुलन के प्रतीक होते हैं। उदाहरणस्वरूप, लिंगो पेन एक प्रमुख नायक हैं, जिन्हें गोंड धर्म और संस्कृति का संवाहक माना जाता है। वे ज्ञान, संगीत और न्याय के प्रतीक माने जाते हैं। लिंगो की कथा गोंड समुदाय में न केवल धार्मिक महत्व रखती है, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान की नींव भी है। चित्रों में लिंगो पेन को वीणा, बांसुरी या अन्य वाद्य यंत्रों के साथ दिखाया जाता है, जिससे उनके सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, गोंड चित्रों में पौराणिक घटनाओं और लोक कथाओं के प्रसंगों को भी चित्रित किया जाता है। जैसे सृष्टि की उत्पत्ति, जल और अग्नि के तत्वों का संतुलन, जीवों की उत्पत्ति, देवताओं और मनुष्यों के बीच संवाद आदि। ये चित्र केवल कथा-वाचन का साधन नहीं होते, बल्कि धार्मिक अनुष्ठान का भी हिस्सा होते हैं, जो सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का कार्य करते हैं।

गोंड चित्रकला में देवताओं और मिथकीय पात्रों की दृष्टि या विज़न केवल उनके दृश्य रूप तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह उनके गुणों, कार्यों और आचरण के प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण में भी प्रकट होती है। जैसे कि बाघ को शक्ति और रक्षक के रूप में दिखाया जाना, मोर को सौंदर्य और पवित्रता का प्रतीक बनाना, या सर्प को परिवर्तन और चैतन्यता का संकेतक मानना — यह सब गोंड समाज की गूढ़ धार्मिक दृष्टि को दर्शाता है।

चित्रकला की यह दृष्टि समय और स्थान से परे जाकर गोंड जीवन-दर्शन की निरंतरता और विकासशीलता को भी दर्शाती है। आधुनिक गोंड कलाकार जैसे जंगड़ सिंह श्याम ने पारंपरिक मिथकों और देवताओं को समकालीन संदर्भों से जोड़ते हुए एक नई दृष्टि प्रस्तुत की है। उनके चित्रों में भी वही पेन देवता, वही प्रकृति के प्रतीक, और वही मिथकीय पात्र आधुनिक जीवन की उलझनों में संवाद करते दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष

गोंड चित्रकला केवल एक आदिवासी कला परंपरा नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत धार्मिक और आध्यात्मिक दर्शन है, जो प्रकृति, मानव और ईश्वर के बीच एक सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करता है। इसमें जीवन के हर पहलू को दैवीय रूप में देखा गया है – चाहे वह एक पत्ता हो या नदी, एक पक्षी हो या इंसान। यह दृष्टिकोण आज के भौतिकवादी युग में एक संतुलनकारी और प्रेरणादायक मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। गोंड चित्रों की धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि हमें यह सिखाती है कि कला केवल आँखों से नहीं, बल्कि आत्मा से भी देखी और समझी जाती है – और यह आत्मिक अनुभव ही गोंड चित्रकला की सबसे बड़ी विशेषता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गंख्या, ओदपुरेव और अंकभयार, एमजीआर, (2024), पालू और इख दुरुल्ज की शैल चित्रकला की विशेषताएँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड ह्यूमेनिटीज, 17(1), पृ 176-179.
2. दास, आलोक और सुधा, (2024), भारतीय कला में रेखीयता का अध्ययन, विशेष संदर्भ में पूर्वी भारतीय लोक चित्रकला। जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी सायकल रिसर्च, 12(6), पृ 2040-2051.
3. फेइफेई, डुआन और इस्माइल, इस्सरेज़ल और रामली, इशाक, (2024), बोनलेस फ्लावर एंड बर्ड पेंटिंग आर्टरू पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण पर लिन:ओक्सी के कला कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन। आइडियोलॉजी जर्नल, 9(2), पृ:37-48.
4. घोष, कमलिका और मंडल, अनुब्रता, (2024), संग्रहालय में तेल चित्रकला और जल रंग चित्रकला पर विद्युत प्रकाश स्रोतों के विकृति प्रभाव पर कुछ अध्ययन। लाइट एंड इंजीनियरिंग, 32(6), पृ :85-92।
5. माझी, हुतेसान और महापात्र, आर (2023), ओडिशा के नुआपाड़ा जिले के गोंड समुदाय की कला, शिल्प और नृत्य पर अध्ययन। शोधकोशः जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 4(1), पृ 708-725।
6. थामन्ना, ऐश्वर्या और सुब्रहमणि, डॉ. (2023), जनजातीय संचार और जीवन दर्शनरू मध्य प्रदेश के गोंड चित्रकला का विश्लेषण। शोधकोशरू जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 4(2), पृ 572-585।
7. मलिक, गरिमा और सेठी, सबीना, (2023), शैक्षिक और विधिक श्रंखलाः गोंड चित्रकला की चित्रात्मक लोककथाएँ: एक प्राचीन संस्कृति का प्रतीकवाद। दर्शनशास्त्र, 15(1), पृ 131-136।
8. सिंह, दीक्षा और राय, अंकिता, (2023), गोंड सौंदर्यशास्त्र और कथात्मक शैलियों में रुझानरू ग्राफिक उपन्यासों में। 3(1), पृ 111-126.
9. गोंड, हर्ष, (2022), मध्य प्रदेश, भारत की गोंड कला के पुनर्निर्माण के लिए एक अध्ययन। 10(2), पृ 1-7। 13140/आरजी.2.2.19235.12328।
10. रथिया, धर्म और बी, प्रवीण और देशपांडे, सुधा और दास, और रथिया, परिनिता, (2022), छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले के पथरिया ब्लॉक के गोंड जनजाति और गैर-जनजाति लड़कों की वृद्धि स्थिति का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लाइफ साइंसेज रिसर्च, 3(2), पृ 10-19.
11. पंवार, अपेक्षा और रानी, अर्चना, (2021), पारंपरिक गोंड कला में समकालीन परिदृश्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च - ग्रंथालय, 9(1) पृ :169-175.
12. कुमार, डॉ. और बोध, मिलिंद। (2021), गोंड जनजाति के बीच पारंपरिक त्योहारों का अध्ययन। यूजीसी केयर ग्रुप 1 जर्नल, 117(4), पृ 763-772.
13. पाढ़ी, सौभाग्य और गोस्वामी, मनाश, (2020), जनजातीय लोककथा से सौंदर्यात्मक और धार्मिक चित्रकला तकः मौखिक कथाओं का दृश्य कला में संक्रमण। जर्नल ऑफ रिलिजन एंड हेल्थ। 63(2), पृ 1-12।.
14. रानी, अर्चना और प्रमुख, (2019), प्रमुख कलाकारों की गोंड चित्रकला (जंगरह सिंह श्याम, राम सिंह उर्वेती का एक अन्वेषणात्मक अध्ययन)। जर्नल ऑफ कॉमर्स एंड ट्रेड। 14(2), पृ 41-47.
15. चेन, सी-जिंग और लिन, चिह-लॉन्ग और ली, सैंडी और कांग, यें-यू, (2016), चित्रकला की सराहना के अनुभवों पर मीडिया रूपों का प्रभाव। इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन क्रॉस-कल्चरल डिज़ाइन, 97(41). पृ 338-344.